

मैथिली / MAITHILI
पेपर II / Paper II
साहित्य / LITERATURE

निर्धारित समय : तीन घंटे

Time Allowed : **Three Hours**

अधिकतम अंक : 250

Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लिअ :

एतय दू खण्ड (SECTION) मे विभक्त कुल आठ प्रश्न अछि ।

अभ्यर्थी कुल पाँच प्रश्नक उत्तर देथि ।

प्रश्न संख्या 1 तथा प्रश्न संख्या 5 अनिवार्य अछि । शेष प्रश्नमेसँ कोनो तीन प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (SECTION) सँ कमसँ कम एक प्रश्नक चयन आवश्यक अछि ।

प्रश्न/खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि ।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि ।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि ।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत । यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशतः लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी ।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.

Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.

Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

Answers must be written in **MAITHILI** (Devanagari script).

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION A

Q1. प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि । काव्य-वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहय । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य) 10×5=50

(a) “अगमने प्रेम गमने कुल जाएत,
चिन्ता पङ्क लागलि करिणी ।
मजे अबला दह दिस भमि झाखओ,
जनिब्याघ डरे भीरु हरिणी ॥
चन्दा दूरजन गमन विरोधक
उगल गगन भरि बैरि मोरा ।
कुहू भरमे पथ पद आरोपल,
आए तुलाएल पञ्चदशी ॥”

10

(b) “काजर-तिमिर-भरमे जसु तन-रुचि,
निबसय-कुँज-कुटीर ।
गति अति कुटिल सुधीर ॥
सजनी, कान्ह से बरजु भुजङ्ग ।
से मोर हृदय-चदन-रुह लागल
भागल धरम-विहङ्ग ॥
लोचन-कोर पड़ैत नव नागरी रहए नपारए धीर ।
कुंचित अरुन अधर भरि पीबए
— कुलवति-बरत-समीर ॥”

10

(c) “नाव अरि लाव नहि, उतरक दाव नहि,
एक बुद्धि आब नहि, सगर अपारमे ।
वीर अरि छोट नहि, सङ्ग एक गोट नहि,
लङ्का लघुकोट नहि, विदित संसारमे ॥
दबुज अबल नहि, पुरी गम्य थल नहि,
प्रदेश अमल नहि युद्धक विचार मे,
अहाँक समान नहि, वीर हनुमान नहि,
सर्वस्वक दान नहि — तुल उपकार मे ॥”

10

- (d) “परम मेधावी कते बालक जत,
मूर्ख रहि हा ! गायहा चरबैत छथि
कते वाचस्पति कते, उदयन जत,
हाय ! बन गोइठा बिछैत फिरैत छथि,
तानसेन कतेक रविवर्मा कते,
घास छीलथि वागमतीक कछेड़ मे,
कालिदास कतेक विद्यापति कते,
छथि हेड़ाएल महींसवारक हेड़मे ।
अन्न ने छै, कैया ने छै कौड़ी ने छै,
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे ?
उठह कवि, तो दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे ॥”

10

- (e) “झमाझम बरसैत मूसलधार,
माघक ठार, चैतक तसः
सभ फूसि ओकरा हेतु ।
लगाबथु ग केओ कतेको जोर
बाप-पीतिकेँ करथु गऽ सोर,
मुदा रोइयाँ एकोटा ओकर
उपाड़ल नहि हेतन्हि ककेरा बुतें ॥”

10

Q2. (a) “मैथिली मे नव-परम्पराक प्रवर्तक महाकवि मनबोध ‘कृष्णजन्म’ मे सर्वत्र ठेठ शब्दक ठाठ बान्हि लोकोक्तिक सटीक प्रयोग कय भाव एवं भाषा दूनू के अत्यन्त हृदयग्राही ओ प्रभावपूर्ण बना देने छथि” — एहि कथनक समीक्षा करू ।

20

- (b) ‘मिथिला-भाषा रामायण’ मे सुन्दरकाण्डक नामकरण पर विचार करैत, कवीश्वर चन्दाझाक कल्पना-कौशल पर प्रकाश दिअ ।

15

- (c) वर्तमान प्रबुद्ध युग मे कोन प्रकारक कवि चाही ? एहि प्रश्नक उत्तर मे ‘यात्री’जी द्वारा रचित ‘चित्रा’ कविता संग्रहक कविता सभक उल्लेख करैत विस्तार सँ विवेचना प्रस्तुत करू ।

15

- Q3.** (a) “लालदासक ‘रमेश्वर चरित मिथिला रामायण’क बालकाण्ड मे मिथिलाक विलक्षण संस्कृतिक मार्मिक चित्रण भेल अछि” — एहि कथनक सविस्तार विवेचना करू । 20
- (b) “समकालीन मैथिली कविताक प्रवृत्ति सामाजिक परिवर्तनक दिशामे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैछ” तर्कसंगत उत्तर दिअ । 15
- (c) ‘कीचक वध’ मे कवि वर्णनक प्रति विशेष मात्सर्य नहि देखा भावनात्मक क्रमबद्ध सुनियोजित एवं चारित्रिक विकास दिस बेसी उन्मुख भेल छथि — प्रतिपादित करू । 15
- Q4.** (a) “सरस जीवनक मधुर गायक महाकवि विद्यापति सौन्दर्योपासक कवि छलाह” — एहि कथनक युक्ति-युक्त विवेचना करू । 20
- (b) समकालीन मैथिली कविताक विकास-यात्रा पर प्रकाश दिअ । 15
- (c) ‘दत्त-वती’ काव्यक द्वितीय सर्ग मे वर्णित गुरुकुलक शिक्षण-व्यवस्था एवं आकर्षक वातावरण ओ विश्वशान्तिक राष्ट्रीय स्वरूपक चित्रण प्रस्तुत करू । 15

SECTION B

Q5. निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहय । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य अछि)

10×5=50

- (a) “पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल मुह श्वेत पङ्कजाका दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि । काजरक कल्लोल अइसन भजुह । गथले फुले नर्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा । पखाक पल्लव अइसन अधर । कनिअराक कर अइसन नाक । सीन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त, वेतक साट अइसन बाँह । परिजातक पल्लव अइसन हाथ ।” 10
- (b) “कोन काज हमरा बुतेँ हायत ? भीख माझब ? भिखमंगोके तँ लोक झझकारिते छैँ । मुदाई मौगी अहलादि कए भरि पेट आगरह कए-कए खुअबैए कते ने सिनेह करैए । बीस गोटे द्वारि घूमब, बीस गोटेक बार सुनब तँ होइत बीस टा पाई घुरि जाइ सेहे नीक, मुदा जँ मौगी देखिलिए ई काँख महक मोटरी ?” 10
- (c) “सुकर्म आ अपकर्म ककरा कहै छै, से बुझबाक बुद्धि जँ अहाँ मे रहैत तँ आइ अहाँकेँ हमरासँ वा हमर ऐ स्टालसँ घृणा नै होइत । एके टोकारा पर अहाँ लगले हमरा लग दौड़ल अबितौँ पुछितौँ जे हमर व्यवसाय घाटा मे चलि रहल अधि की नफामे । अहाँ से कयलौँ नै आतेँ केवल आश्रमक बा परिवारक, अपितु अहाँ अपनो लेल भारेटाछी ।” 10
- (d) “सैह काल तँ हमरा सभक काल भऽ गेला आइ मासान्त, काल्हि संक्रान्ति, परसू भदवा, एकटा टाट बान्हक हो तँ नौ दिन पतड़ा देखैत-बैसल रहूँ । औ संसारक और कोनो देश मे भदवा मानैत अछि ? भद्रामहरानी मे वास्तविक सामर्थ्य छैन्ह तँ ओकरा सभणें कियेक नहि धरैत छथिन्ह ? पृथ्वी पर और-और लोकें दिक्शल कियेक नहि लगैत छैक ? यूरोप, अमेरिका बालाकेँ अघपहरो कियेक नहि धरैत छैक ? सबसँ बुड़िबक दीनानाथ हमरे लोकनि छी ?” 10
- (e) “सरिपहुँ ... बागमती, कमला, बलान, गण्डक आ कोसी खास कऽ कोसी तँ अपराजिता अछि, ने । ककरहु सामर्थ्य नहि जे एकरा पराजित कऽ सकय । सरकार आओत ... चलि जायत मिनिस्ट्री बनत आ टूटत, मुदा ई कोसी, ई बागमती, ई कमला आ बलान ... अपन एहि प्रलयंकारी गति मे गामक-गाम के भसि अबैत रहत ।” 10

- Q6.** (a) “खट्टर ककाक विनोदपूर्ण विचार-लहरी, मिथिलाक संस्कृति ओ पुरातन सभ्यता पर मार्मिक व्यंग्यक प्रहार कयने अछि” — एहि कथनकेँ प्रमाणित करू । 20
- (b) ‘पृथ्वी पुत्र’ उपन्यास मे जीवनक ओ चित्र उतारल गेल अछि, जे सत्य पर आधारित अछि, — एहि युक्तिक समीक्षा करू । 15
- (c) ‘लोरिक विजय’ उपन्यासक कथानक मार्मिकता ओ अतिरंजकतासँ मिश्रित अछि — एहि कथनक खण्डन वा मण्डन करू । 15
- Q7.** (a) ‘वर्णरत्नाकर’क द्वितीय कल्लोलमे वर्णित विषय-वस्तुक वर्णन करैत एहि पोथीक महत्त्वकेँ प्रतिपादित करू । 20
- (b) आधुनिक मैथिली कथा मे वर्तमान समाजक चित्र अंकित रहैत अछि; ‘कथा-संग्रह’ मे पठित कथाक आधार पर एहि कथनक समीक्षा करू । 15
- (c) ‘मधुरमनि’ कथा मे ‘किरण’जी श्रमजीवी वर्गक दाम्पत्य जीवनक अनुराग-विरागक हिलसगर कथा कहने छथि एहि कथनकेँ युक्तिसंगत सिद्ध करू । 15
- Q8.** (a) मिथिलाक मध्यवर्गीय अभिजात्य वर्गक छद्म विद्रूपक चित्रण राजकमलक कथा मूल तत्त्व कहल जाइत अछि — एकर विवेचना करू । 20
- (b) ‘झगड़ा’ कथा शीर्षक संयोगाश्रित घटना प्रधान अछि, एकर उद्देश्य करुणा उत्पन्न करब थिक । एहि मे लेखककेँ कतेक सफलता भेटल छन्हि ? ऐकरा प्रमाणित करू । 15
- (c) ‘भफाइत चाहक जिनगी’क नाटककार शिक्षित-बेरोजगार युवकक माध्यमे समाजमे व्याप्त जीवनक समस्या एवं संघर्षक संग परिस्थितिक अनुसार अपनाकेँ अनुकूल बना सकए, तफर बुद्धिवादी सामंजस्य प्रस्तुत कएलनि अछि — एहि कथनक समीक्षा करू । 15